राष्ट्रीय सहारा

Delhi, 29.04.2014, Page-8

# भाग कर आए बच्चों के पुनर्वास पर काम करेगा वर्किंग ग्रुप

- बच्चों से ही मांगी जा रही राय कि उनकी जिंदगी कैसे बनाई जाए बेहतर
- छह महीने में वर्किंग ग्रुप को देनी होगी रिपोर्ट
- रेलवे ने माना कि स्टेशन पर बाहर से भागकर आने वाले बच्चों की बड़ी संख्या

**नई दिल्ली (एसएनबी)।** दिल्ली के बाहर से भाग कर आए और स्टेशन पर रह रहे बच्चों की मदद, उनकी समस्याओं को समझने और इसके समाधान के लिए राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग ने एक वर्किंग ग्रुप को गठन किया है जिसकी पहली बैठक पिछले हफ्ते इंडिया हैबिटैट सेंटर में हुई। इस ग्रुप को 6 महीने के भीतर अपनी रिपोर्ट जमा करने को कहा गया है।

इस वर्किंग ग्रुप के एक सदस्य और चेतना नामक संस्था के डायरेक्टर संजय गुप्ता ने बताया कि इस समिति में बाल अधिकार से जुड़ी संस्थाएं, विभिन्न तरीके से इन लोगों को मदद करने वाली संस्थाएं,एनजीओ और रेलवे के लोग भी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि बहुत-सी संस्थाएं इन बच्चों के लिए काम कर रही हैं लेकिन वे क्या काम कर रही हैं, कैसे काम कर रही हैं और इसका किस तरह से फायदा इन बच्चों को हो रहा है यह नहीं पता चल पाता है। लेकिन अब सारी बातों को इस ग्रुप के सामने रखा जा रहा है जिससे इन बच्चों से संबंधित कार्यक्रम को समयबद्ध और योजनाबद्ध तरीके से चलाया जा सके। स्टेशन पर पाए जानेवाले बच्चों को उनकी सहमति के अनुसार पुनर्वासित किया जा सके।

ज्यादातर लोगों का मानना है की रेलवे स्टेशन इस तरह के बच्चों की एक बड़ी शरणगाह है हालांकि इनकी संख्या को लेकर बहुत मतभेद है। रेलवे भी अब यह स्वीकार करता है की स्टेशन पर बाहर से भाग कर आए बच्चों की बड़ी तादाद है और अब वह इनकी मदद के लिए सहयोग की बात भी करता है जिसे वह पहले नकारता रहा है। इस बैठक में इन बातों पर भी चर्चा हुई कि स्टेशन पर बच्चे क्यों आते हैं और इस पर व्यापक समझ बनाने के लिए इन बच्चों से भी बात करने पर सहमति बनी है।

इस बैठक में यह मसला भी उठा कि ये बच्चे स्टेशन छोड़ें और सामान्य जिंदगी बसर करें। जब हम इन बच्चों से चर्चा कर रहे हैं कि वे स्टेशन पर भाग कर आए हैं और स्टेशन क्यों छोड़कर नहीं जाना चाहते हैं तो उनसे ही जानने की कोशिश करें कि उनकी नजर में क्या समाधान निकाला जाना चाहिए। अभी तक इस मसले पर सामान्य दृष्टिकोण यह था कि मारपीट कर बच्चों को स्टेशन से भगाया जाए और ऐसा सुरक्षा बल के लोग किया भी करते थे।

इस मामले के 'संयोजन' से जुड़ी खुशबू जैन ने बताया की सबसे जरूरी बात यह है इस पूरे मसले को अच्छी तरह समझना। अभी तक क्या होता रहा है इन मसलों पर, कौन-कौन से ग्रुप और संस्थाए काम करती रही हैं चाहे सरकार की हो या सिविल सोसाइटी की या बच्चों से जुड़ी संस्थाएं। एक और बात भी बैठक में सामने आई कि स्टेशन पर बाहर से भाग कर आए बच्चों के अलावा स्लम के बच्चे और कम्युनिटी चिल्ड्रन भी पाए जाते हैं।